Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA

Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 10, October. 2025

सरला देवी चौधरानी : इतिहास के पन्नों से बिसराया व्यक्तित्व

डॉ. मीना राठौर

सहायक प्राध्यापक-हिंदी, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस, श्री नीलकंठेश्वर शासकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय - खंडवा.

DOI: https://doi.org/10.57067/ir.v2.i10.429

सरला देवी चौधरानी भारतीय समाज में एक ऐसी स्त्री का उदाहरण हैं, जिसने अपनी अदम्य इच्छाशक्ति, देशप्रेम और नारी अस्मिता के बल पर इतिहास में अमिट छाप छोड़ी। रवींद्रनाथ टैगोर की भांजी और स्वर्णकुमारी देवी की पुत्री सरला देवी ने अपने समय की परंपराओं को तोड़ते हुए शिक्षा, स्वदेशी आंदोलन और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया। प्रारंभिक जीवन में स्वावलंबन और विद्रोही प्रवृत्ति से प्रेरित सरला ने गांधीजी के आदर्शों को अपनाया, परंतु उनका अंधानुकरण अंततः उनके व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में विघटन का कारण बना। गांधी के प्रति उनके निस्सीम समर्पण ने उन्हें एक 'आध्यात्मिक पत्नी' के रूप में स्थापित किया, पर इसके परिणामस्वरूप उनका स्वतंत्र अस्तित्व गौण हो गया। विवेकानंद और गांधी, दोनों ही उनके व्यक्तित्व से प्रभावित थे, परंतु इतिहास ने उन्हें वह स्थान नहीं दिया जिसकी वे अधिकारी थीं। सरला देवी चौधरानी का जीवन नारी चेतना, स्वदेशी भावना और आत्मसम्मान की प्रेरक गाथा है, जो यह दर्शाती है कि समर्पण और स्वत्व के बीच संतुलन ही स्त्री के अस्तित्व की वास्तविक पहचान है।

Keywords: सरला देवी चौधरानी, महात्मा गांधी, नारी अस्मिता, स्वदेशी आंदोलन, समर्पण और स्वत्व.

सरला देवी चौधरानी स्त्री के समर्पित व्यक्तित्व का अनूठा उदाहरण है । जिसमे एक विवाहित स्त्री किसी प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी पुरुष की आज्ञा पालन को अपना सर्वस्व मान परिवार और समाज की अवहेलना करती हैएऔर अंतत: स्वयं को अकेला और उपेक्षित ही पाती है । गाँधी को अपना आदर्श मान उनकी हर आज्ञा का अक्षरस: पालन करने की जिद ने अंत में सरला को उस अपराध का दोषी करार दिया जो उसने कभी किया ही नही। अपने जिस गरिमामय व्यक्तित्व को सरला देवी अथक प्रयासों से स्वयमेव गढ़ती हैंए एक व्यक्ति की अंधभक्ति में अपने उसी व्यक्तित्व को कुंठा और वेदना की गहरी खाई में धकेल देती है। सरलादेवी उस परिवार से आती है जिसका नाम आज भी साहित्य जगत में बड़ी ही प्रतिष्ठा के साथ स्थापित है । नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर की बहन स्वर्ण कुमारी देवी की बेटी है सरला देवी चौधरानी। माँ स्वर्ण कुमारी देवी बंगाल की पहली उपन्यास लेखिका है। उनके दो उपन्यासों के अंग्रेजी अनुवाद भी लंदन से छप चुके हैं। रवि मामा यानी रवींद्रनाथ टैगोर की तो खैर बात ही क्या। अदम्य साहस के साथ अपने अधिकारों के लिए कुछ भी कर गुजरने को तत्पर रहने वाली सरला देवी चौधरानी न जाने किन भावनाओं से वशीभूत हो गाँधी की अदम्य कामनाओं की पूर्ति का साधन बन गयी। सब कुछ ठीक चलता भी रहता पर जैसे ही उन्हें लेकर गाँधी पर व्यक्तिगत आक्षेप लगने लगे उन्होंने सरला को अपने व्यक्तिगत जीवन के साथ - साथ राजनैतिक पटल से भी दरकिनार कर दिया।

Received **02 October 2025**; Accepted **20 October 2025**. Available online: **30 October 2025**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 10, October. 2025

सरला देवी को बगावत अपने पिता से विरासत में मिली थी। उनके पिता जानकीनाथ घोषाल ने उनकी माँ स्वर्णकुमारी देवी से विवाह करने के लिए टैगोर परिवार की तमाम रस्मों को मानने से न सिर्फ इन्कार किया वरन अपनी पुस्तैनी जायदाद गवाना भी सहज स्वीकार किया - "टैगोर परिवार का दस्तूर था कि उनकी लड़कियां शादी के बाद ससुराल नहीं जाती थीएलड़के घर जमाई बनकर जोड़ासाकों में रहने आते थेएपर जानकीनाथ घोषाल ने न सिर्फ घर जमाई बनना अस्वीकार किया बल्कि हिंदू धर्म छोड़कर ब्रह्म धर्म अपनाना भी स्वीकार नहीं किया। उनके पिता ने इस शादी के विरोध में उन्हें अपनी संपत्ति से बेदखल कर दिया क्योंकि टैगोर पिराली ब्राह्मण थे जिनके पूर्वजों की एक शाखा ने मुसलमान धर्म अपना लिया था। शायद यही जिद सरला के खून में दौड़ रही है।"[1] अपने निर्णय अपनी शर्तों पर लेना और उन पर कायम रहना यह गुण सरला देवी को अपने पिता से विरासत में मिला था। शायद यही कारण था कि सरला देवी जीवनपर्यंत अपनी शर्तों पर जीती रही ।

उस जमाने में लड़कियों का शिक्षा प्राप्त करना जितना कठिन था उससे भी कठिन था विज्ञान विषय लेकर पढ़ना। लेकिन जिद करने की प्रवृत्ति तो जैसे सरला देवी की नसों में खून की तरह बहती थी । अपनी धुन और जिद की पक्की सरला ने विज्ञान की पढ़ाई करने की ठान ली -"साइंस एसोसिएशन में उसके भाई के साथ एक ममेरा भाई उसके अगल-बगल सबसे आगे लगी तीन कुर्सियों पर बैठते । बाकी लड़के फुसफुसा कर भाइयों के लिए कहते बॉडीगार्ड। वह वहां पढ़ने वाली एकमात्र लड़की जो थी।"[2] रोज ममेरे भाइयों को साथ लेकर पढ़ने जाना पड़ताए कई तरह के ताने भी सुनने पड़तेए लेकिन उनसे घबरा कर अपना निर्णय बदलना सरला जैसे व्यक्तित्व के शब्दकोश में था ही नहीं ।

निडर, साहसी और दबंग व्यक्तित्व की धनी सरलादेवी अनायास ही मोहनदास करमचंद गाँधी की कार्यशैली से प्रभावित हो उन्हें अपना आदर्श मान उनकी सेवा करना परमधर्म स्वीकार कर लेती है। सरला के जीवन का यही वह अँधा मोड़ था, जहाँ से उसने स्वयं ही अपने साहसी व्यक्तित्व की बागडोर किसी और के हाथों में सोप दी । किसी व्यक्ति की निस्वार्थ सेवा को अपने स्वार्थवश किस तरह उपभोग करना है, यहां इस वाक्य से समझा जा सकता है -"सरला मेरी आव् - भगत का बोझ तुम पर आ पड़ा है। मैं जहां ठहरता हूं वह जगह तो धर्मशाला हो जाती है। ऊपर से कहानी सुना कर तुम्हें मेरी थकान भी उतारती पड़ रही है।"[3] यहाँ शब्द सेवा में रत सरला के प्रति आत्मग्लानी भरे है लेकिन तुष्टिकरण का भाव स्पष्ट ध्वनित होता है।

ऋग्वेद के मंत्र के आधार पर आहितगर्विता कविता लिखने वाली सरला देवी चौधरानी, अपने घर के बगीचे में अष्टमी के दिन शारीरिक क्षमता की प्रतियोगिता कराने वाली सरला देवी, अपने घर के पिछवाड़े तालाब के पास की जगह पर व्यायामशाला खोलने वाली सरला देवीए नवयुवकों को तलवारबाजी, लट्ठबाजी, मुक्केबाजी का प्रशिक्षण दिलाने हेतु स्वयं के खर्चे पर शिक्षक उपलब्ध कराने वाली सरला देवी हर

Received 02 October 2025; Accepted 20 October 2025. Available online: 30 October 2025. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 10, October. 2025

एक मुकाम पर अपने तरीके से कोशिश करने वाली सरला देवी चौधरानी जब देखती हैए कि जापान से भारत आने वाले चित्रकार और यात्री अपने साथ ढेर सारे कागज भी लेकर आते हैं। तब उन्हें भारत की दीनहीन दशा और हर क्षेत्र में विदेशों पर निर्भरता का दुख होता है -"सरला को पता था कि भारती पत्रिका के लिए लोग इंग्लैंड से आया कागज ही व्यवहार करते हैं। सचमुच हिंदुस्तान अपना कागज तक नहीं बनाता।"[4] सरला के मन में स्वदेशी का भाव जन्म लेता है। गाँधी का स्वदेशी आंदोलन रूप लेता उससे पहले सरला देवी लक्ष्मी भंडार खोल चुकी थी।

आखिर हम अपनी जरूरत अपने बल पर पूर्ण क्यों नही कर सकते । सरला का बचपन जोड़ासाको में टैगोर परिवार के बीच बीता था। टैगोर परिवार भव्य आयोजनों के लिए जाना जाता था। आत्मनिर्भरता प्रप्ति की दिशा में सरला कई प्रयास करती है - "सरला के मन में लक्ष्मी भंडार खोलने की योजना आयीएजिसमें बंगाल के जिलों से तरह-तरह की हाथ से बनी चीजेएकपड़े और साड़ियां बेची जाएगी। बचपन में देखे टैगोर परिवार के "हिंदू मेला" और "शिल्प मेला" की सरला को स्मृति थी।"[5] टैगौर परिवार में पली -बढ़ी सरला परिवार के रीति - रिवाजों और संस्कृति को नये कलेवर स्वदेशी जागरण अभियान के तहत अपने उद्देश्य प्राप्ति हेतु सहायक बनाती है ।

भारत की आजादी के लिए अपनी पारिवारिक प्रतिष्ठा और वैभवशाली जीवन को एक तरफ रख सरला देवी चौधरानी राष्ट्र प्रेम की कठिन डगर पर जिस साहस के साथ आगे बढ़ती चली गयी तत्कालीन समाज व्यवस्था में वह साहस जुटाना एक स्त्री के लिए आसान नही था -"सरला शादियों में और ब्रह्म समाज के माघोत्सव में पूर्ण स्वदेशी कपड़ों और नागर जूतियां पहन कर जाती।"[6] महंगे सिल्क और बनारसी परिधान से सजी-धजी रहने वाली सरला देवी स्वदेश प्रेम के लिए खादी से बने मोटे-मोटे स्वदेशी वस्त्र और नागर जूतियाँ पहनने लगी । उनके समर्पित व्यक्तित्व को पहचान कर स्वयं स्वामी विवेकानंद ने उन्हें भारत की नारियों का प्रतिनिधित्व करने के योग्य समझा - "सरला क्या तुम अगली बार मेरे साथ विदेश जाना चाहोगी? तुम्हे भारत की नारियों का प्रतिनिधित्व कर पश्चिम को हमारी प्राचीन संस्कृति और आध्यात्मिकता का संदेश देना चाहिए।"[7] लेकिन जीवन की उस महत्वपूर्ण उपलब्धि को हासिल करने का साहस उस समय सरला देवी जुटा नहीं पायी या निर्णय लेने में देर कर दी थी।

गाँधी द्वारा दिए जाने वाले कार्य और उनको करने की पाबंदियाँ दिनों - दिन सरला के लिए मुसीबत बनती जा रही थी। सरला महसूस करने लगी कि कहीं न कहीं गांधी उन पर अनावश्यक दबाव बना उनके स्वतंत्र व्यक्तित्व को बाधित करने का प्रयास कर रहे हैंए और वो उसके लिए आवाज उठाये उससे पहले ही गांधी अपने शब्दों के मायाजाल से सरला को पुन: अपने प्रति समर्पित रहने को तैयार कर लेते -"सरला, सहने की शक्ति रखना सत्याग्रह का अंग है। तुमने अपने माता-पिता का सम्मान बचाने अपने संकल्प को त्याग दिया । वरना तुम शादी की तैयारियों के बीच से निकलकर

Received 02 October 2025; Accepted 20 October 2025. Available online: 30 October 2025. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 10, October. 2025

दूर चली जा सकती थी । यह बहुत गहरी आत्मशक्ति से ही सम्भव है । किसी को चोट न पहुंचाकर खुद तकलीफ सह लेना सच्ची अहिंसा है ।”[8] वे जब -जब महसूस करते की सरला के अंदर बगावत के बीच पैदा हो रहे हैंएअपनी बातों से उसे निरीह प्राणी की तरह पूर्ण समर्पण के लिए राजी कर लेते ।

बचपन से देश प्रेम और स्वदेशी जागरण के लिए समर्पित रहने वाली सरलादेवी को चौके - चूल्हे में रत देखने को आतुर गाँधी कहते है - “तब तो उसका शुक्रिया अदा करना होगा । सरलाए तुम रसोई में खुद कुछ क्यों नहीं पकाती ? तुमको क्या खाना बनाने का शोक नहीं ?”[9] सरला देवी जैसी कुशाग्र बुद्धि की महिला चौके चूल्हे में लगने वाले समय को समय की बर्बादी मान उस समय का सदुपयोग किसी बौद्धिक प्रवृत्ति हेतु खर्च करना उपर्युक्त समझती हैं। वे गाँधी को जवाब देते हुए कहती हैं- “आपको लगता है कि खीर मुझे बनानी चाहिए थीए लेकिन हम जिसको किसी काम के लिए वेतन देते हैंए उसके काम को खुद करेंए तो क्या हम उसे आलसी और कामचोर नहीं बना रहे है।”[10] अगर घर में चौके - सरला देवी अपने तर्क के माध्यम से अपनी बात को सही साबित करती हैए क्योंकि जिस काम के लिए नौकर को वेतन दिया जा रहा है उस काम को खुद करना एक तरह से उस नौकर को कामचोर बनाना ही है।

गाँधी की कही गई हर बात हर आदेश सरला के लिए लक्ष्मण रेखा की तरह होता जिसे उलांघ कर इधर-उधर होना उनके बस का नही था । गांधी अपनी सेवा में रत सरला को कुछ इस तरह से प्रशिक्षित कर रहे थे कि उनकी सेवादार बनी सरला के व्यवहार में अनजाने ही पति और परिवार के प्रति उपेक्षा का भाव स्पष्ट द्रष्टिगत होने लगा -“सरलादेवी को लग रहा है कि रसोई को लेकर इतनी व्यस्त वे जिन्दगी में कभी नहीं रही । सुबह से दौड़ लगा रही है कि फल काटकर तश्तरी में रख गाँधी को समय से दे दें । कभी साबूदाना भिगो रही है कि शायद उसकी नमकीन खिचड़ी या मीठा डालकर हलवा बना सकें । …पहली बार किसी के लिए रसोई में जाकर खुद कुछ बनाने का ख्याल सरलादेवी के मन में आया है । रसोई से बाहर निकलते हुए सास के चेहरे पर आश्चर्य देख कर सरलादेवी एक पल के लिए हिचक उठीए फिर आगे बढ़ गयी । सबको सब कुछ समझाया तो नहीं जा सकता ।”[11] सम्पन्न घराने की राजसी ठाटबाट में रहने वाली सरला देवी जिसने कभी रसोई घर में कदम नहीं रखा थाए गाँधी की सेवा में रत उसी सरला को रात-दिन रसोई घर के चक्कर लगाते देखना परिवार वालों को अचम्भे में डाल रहा था। लेकिन अंधभक्त सरला देवी इन सबसे बेखबर सेवा कार्य में संलग्न थी। प्रश्न यह भी उठता है कि क्या इतनी पढ़ी लिखी समझदार और विद्रोही व्यक्तित्व की धनी सरला देवी सिर्फ गांधी की आज्ञा पालन में ही समर्पित थी या उनकी कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षा भी इसके पीछे कार्य कर रही थी।

स्वयं गांधी चाहते थे की सरला हर पल, हर समयएसिर्फ उनके आसपास रहे। फिर चाहे सेवा के लिए बातें करने के लिएएया फिर किसी राजनितिक गतिविधि

Received 02 October 2025; Accepted 20 October 2025. Available online: 30 October 2025. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 10, October. 2025

हेतु रणनीति बनाने के लिए "वे जानती है कि गाँधी भी यही चाहते है । पाँच मिनट भी न दिखेए तो किसी को खोजने भेज देते हैं कि सरलादेवी को कहो कि बुला रहे हैं । सुनते ही सरला देवी तीर की तरह भागकर तुरंत वहाँ पहुँच जाती है। वैसे भी कुछ भी करते हुए गाँधी का ख्याल बना ही रहता है।"[12] गाँधी की सेवा में रत सरला वास्तविकता से अनजान स्वयं को भाग्यशाली मान बैठी थी ।

पुत्र दीपक को भी उनसे शिकायत है - "माँ, तुमने सुना, मैंने क्या कहा? आजकल तुम कोई बात सुनती ही नही हो !"[13] सरला के इकलौते पुत्र दीपक को भी इस बात का एहसास है कि उसकी माँ उसके प्रति ममत्व भाव से परे होती जा रही है। लेकिन अंधभक्त सरला पतिएपुत्र और सास को भूल गाँधी की तीमारदारी में फिक्रमंद हुई जा रही थी -"सुना कि गाँधी दिल्ली में खड़े होकर नहीं बोले। बैठे-बैठे बोले। सरला देवी को झुंझलाहट होती है। पचास वर्ष की उम्र में इतनी कमजोरी का कारण जब -तब किया गया उपवास नहीं तो और क्या है ?..... खड़े होकर बोलने से गांधी का पूरा शरीर कांपने लगता है । ऐसा शरीर लेकर क्या खाक देश सेवा होगी। इस बार लौटेंगे तो सरला देवी एक ना सुनेंगी। जो खिलाएगी वही खाना होगा।'[14] एक जिम्मेदार सभ्य गृहिणी परिवार को उपेक्षित छोड़ किसी आदर्श पुरुष के प्रति इस तरह समर्पित होती है कि अन्ततः यही समर्पण उपेक्षा का कारण बनता है ।

गाँधी ने अपने शब्दों के प्रभाव से एक प्रतिष्ठित घराने की बेटी और एक राजघराने की बहू को अपने पारम्परिक रेशम के महंगे परिधानों से पृथक कर हथकरघे से बनी खादी की साड़ियां पहनना सिखा दिया -"सरलादेवी के जैसी पढी-लिखी समृद्ध महिला अब हथकरघे की ही साड़ियां पहनती हैएइस बात का जिक्र गाँधी हर जगह करते हैं। पन्द्रह साल पहले खोले उनके लक्ष्मी भंडार को स्वदेशी चीजों के लिए कांग्रेस से मिले मेडल की बात बताते हैं। गाँधी की इस बात से सरला देवी के मन में हर बार नया जोश जग उठता है।"[15] गाँधी ने अपनी वाकपटुता से सरला के मन में यह बात बैठा दी कि उनका हर त्याग गांधी के हृदय में उन्हें एक विशिष्ट प्रदान करता है। वे जब तब साधिकार अपनी इच्छा सरला पर जाहिर करते और और पूरी होने पर अपनी बातों से सरला की तारीफ -"अब सरला की कहानी आगे सुननी है । आज मैंने वही सब खाया जो तुमने खिलाया। तूम मेरा ऐसे ख्याल रखती हो जैसे की कोई नर्स रखती है। आज सचमुच शरीर अच्छा लग रहा है । अब कहानी आगे चलेगी तो मेरी ताकत और बढ़ेगी।"[16] इन्हें एक प्रतिभाशाली व्यक्तित्व की धनी महिला से रसोई घर में स्वादिष्ट व्यंजन तैयार करवाना है और उसे ग्रहण करते समय उसी महान व्यक्तित्व के मुँह से कहानी भी सुननी है।

ये वही गाँधी है जो अपनी पत्नी से किसी गैर व्यक्ति का पेशाब उठवाते है और जब कस्तूरबा को असहय लगा - "कस्तूरबा का तमतमाया मुंह देखकर गांधी गुस्से से कह उठे- यह कलह मेरे घर में नहीं चलेगा। कस्तूरबा ने भड़ककर कहा -"तो अपना घर अपने पास रखो मैं यह चली"। तब गाँधी गुस्से में उसका हाथ

Received **02 October 2025**; Accepted **20 October 2025**. Available online: **30 October 2025**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 10, October. 2025

पकड़कर बाहर निकालने दरवाजे तक खीचकर ले गये थे ।"[17] कस्तूरबा के प्रति अपने इस दुर्व्यवहार का जिक्र स्वयं गाँधी ने अपनी आत्मकथा में किया है ।

दिन रात गाँधी की तीमारदारी में लगी सरला देवी कही न कही अपने शोषण को महसूस कर रही थी उन्हें इस बात का गहरा यकीन हो चला था कि जो कुछ वो चाहती है, उसके लिए उन्हें ओरतों की एक स्वतंत्र संस्था स्थापित करनी ही होगी-"सरला को लगा कि पुरुषों के संस्थानों से जुड़कर नहीं, बल्कि औरतों की एक स्वतंत्र संस्था से ही यह हासिल होगा। 'मनुस्मृति' लिखकर मनु ने औरतों को जीवनभर के लिए पिता -पति -पुत्र किसी न किसी पुरुष के अधीन रख दिया है। जो पुरुष अपने भाषण में औरतों की आजादी और समान अधिकार देने की बातें करने के शौकीन होते हैं, वे भी हकीकत में मनुवादी ही होते हैं।"[18] पुरुषों से समानाधिकार की उम्मीद करना अनुचित था। "भारतीय पुरुषों को आराम का वक्त मिलता है, पर औरतों को कम से एक घड़ी मरने की भी फुर्सत नहीं मिलती। वे पुरुषों की दासी मात्र है। उनका अपना स्वतंत्र अस्तित्व ही नहीं है ।....पति की सेवा में उसे यम से भी लड़ना होता है।"[19] एक तरफ गाँधी के कभी न खत्म होने वाले आदेश दूसरी तरफ पति और पुत्र की उम्मीदें तीसरे सरला देवी की राजनितिक महत्वाकांक्षाएं कुल मिलाकर एक स्त्री के जीवन को तनावग्रस्त बनाने के लिए काफी थे ।

गाँधी को सरला में अनंत संभावनाएं नजर आती है -"मुझे अमृतसर में मिलने आयी एक औरत ने बताया था कि तुमने पंजाबी औरतों को रविंद्रनाथ के "एकला चोलो रे" गीत का पंजाबी अनुवाद कर गाना सिखाया है। सरला, तुममें सचमुच अकेले चलने की शक्ति है!"[20] आत्मविश्वासी और गजब की साहसी सरला देवी की एक उत्क्रष्ट छवि स्वत: ही गांधी की नजरों में निर्मित होती जा रही थी। स्वदेशी की सौगंध लेने हेतु पुरुष वर्ग को तत्पर करने में सरला एक उचित माध्यम हो सकती है -"गाँधी ने मजाक करते हुए कहा-वैसे देखो तो, स्वदेशी की सोगन्ध लेना और पुरुषों को लेने के लिए मजबूर करना तुम स्त्रियों के हाथों में ही है। तुम्हारा क्या ख्याल हैघ तुम कहोगीएतो पंडित रामभजदत्त चौधरी क्या तुम्हारी हर बात नहीं मान लेंगे?" [21] गांधी अच्छी तरह से जानते थे कि पंडित रामभजदत्त चौधरी को स्वदेशी की सौगंध दिलाने के लिए एकमात्र सरला ही राजी कर सकती थी। इस हेतु सरला को वे सबसे उपर्युक्त हथियार मानते थे।

पंडित रामभज दत्त चौधरी सब कुछ जानते समझते हुए भी सरला की इस अंधभक्ति को बर्दाश्त करते रहते हैं। लेकिन जब पानी सर से ऊपर होने लगा तब उन्होंने सरला को एहसास दिलाया कि - "एक सप्ताह के बाद एक बार उन्होंने टोक दिया- लगता हैएतुम गांधी का तोता बन गई हो। उनकी हर बात दोहराती रहती हो।"[22] लेकिन सरला देवी की महत्वाकांक्षा रूपी चट्टान के आगे पति की हर दलील जैसे टकरा कर लौट जाती।

गाँधी को अपना आदर्श मानने वाली सरला पति की दैहिक आवश्यकताओं को भी एक सिरे से नकार देती हैएजो पति-पत्नी के बीच गहरी खाई को जन्म देता है - "रामभज सरला की बातों से कभी-कभी घुटन सी महसूस करते हैंएखासकर ब्रह्मचर्य की बात से उन्हें खीज

Received **02 October 2025**; Accepted **20 October 2025**. Available online: **30 October 2025**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 10, October. 2025

होती है। देख रहे है कि सरला बहुत देर रात तक लिखती - पढ़ती रहती है। उनके गहरी नींद में जाने के बाद ही सोने आती है। सुबह कितनी भी जल्दी नींद खुलेए देखते हैं कि सरला बगल में नहीं है। तो अब क्या रामभज दत्त चौधरी को भी मजबूरन ब्रह्मचारी बनना होगा ?" 23 गांधी के नक्शे - कदम पर चलने के जोश में सरला देवी जाने -अनजाने परिवार के हर सदस्य की अवहेलना करती हैं, जिसमें पति रामभज दत्त चौधरी सबसे अधिक प्रताड़ित होते हैं।

गाँधी के प्रति सरला की दीवानगी किसी से छिपी नहीं थी पर जब पानी सर से ऊपर बहने लगता हैए तब उनकी सास से रहा नहीं जाता - " वो गाँधी होगा महात्मा ब्रह्मचारी पर हमें न जँचा। महात्माओं का गिरहस्ती में क्या काम? उसके खाने -पीने के लिए सरला ने जो किया, सो तो अपने बेटे के लिए तक कभी न किया। बकरी का दूध तो बकरी का दूध । फल हो तो फल । साबूदाना तो साबूदाना । खाने -पीने के इतने चोंचले तो कहां के महात्मा हुए? और वे दीपक को क्या बकरी के दूध पर शेर बनाएंगे ?" 24 गांधी के कारण जहां एक और उनका बेटा और पोता पत्नी और मां के प्यार और स्नेह से वंचित हो रहे थे, वहीं दूसरी और उनका परिवार बिखर रहा था।

लेकिन सरला देवी पर तो जैसे गांधी का भूत सवार था उन्हें किसी भी प्रकार की रोक-टोक का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। रामभज दत्त को पत्नी के स्वास्थ्य की चिंता होने लगती है - " अब तो लगता हैएतुम भी गाँधी जी जितना ही कम खाने लगी हो। अगर जोगिया कपड़े पहन लो तो तुम्हारे मामा अवनीन्द्रनाथ की भारत माता की तस्वीर जैसी लगाने लगो । चार हाथ तो तुम्हारे उग ही आए है।"25 लेकिन जिस पर महत्वाकांक्षाओं का भूत सवार हो उसे हर एक सच्ची बात गलत ही नजर आती है।

1943 में जब गाँधी इक्कीस दिनों के अनशन की घोषणा करते हैं और उनका स्वास्थ्य बेहद कमजोर हो जाता हैएतब सरला देवी जेल में आकर उनसे भेंट करती है। 1944 में जब गाँधी जेल से छुटते हैं तब सरला देवी उन्हें एक पत्र लिखती हैं और उनसे मिलकर कुछ विचार साझा करना चाहती हैं। लेकिन उन्हें इस पत्र का कोई जवाब नहीं मिलता। अगस्त 1945 में गाँधी की मुलाकात सरला देवी के बेटे दीपक से होती है और उन्हें पता चलता है कि सरला देवी अस्वस्थ हैएतब गाँधी सरला को पत्र लिखते हैं-"जन्म मृत्यु हमारे जीवन के अंग हैं। तुम्हारे हिस्से की तकलीफ सहने की तुम्हें शक्ति मिले।"26 किंतु सरला देवी यह पत्र पढ़ने के एक दिन पहले ही इस दुनिया से विदा ले चुकी थी। एक साहसी और प्रतिभाशाली स्त्री के पूर्ण समर्पण का क्या यही अवदान होना चाहिए था? सरला देवी का साहसी व्यक्तित्वए देश प्रेम के लिए उनका समर्पणए परिवार की आहुति और इन सब के बावजूद किसी पद- प्रतिष्ठा की कोई लालसा न रखना उन्हें एक उच्च कोटि के गरिमामय व्यक्तित्व पर प्रतिष्ठित करता है। जीवन के अंतिम दिनों में अकेले और गुमनाम जिंदगी जीते हुए उन्होंने कभी किसी पर कोई आक्षेप नहीं लगाये ।

Received 02 October 2025; Accepted 20 October 2025. Available online: 30 October 2025. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 10, October. 2025

लेकिन इतिहास के पन्नों पर इस महान व्यक्तित्व की गरिमामय उपस्थिति को उतनी प्रतिष्ठा के साथ दर्ज नहीं किया जाना जितनी की वह हकदार थी , उनके साथ एक तरह का अन्याय ही समझा जाएगा।

अनिमेष मुखर्जी ठाकुरबाड़ी उपन्यास में लिखते हैं "स्वामी विवेकानंदऔर महात्मा गाँधी के जीवन में कई समानताएं और असमानताएं हैंएलेकिन एक सरल सा बिंदु ऐसा है जो इन दोनों को एक खास तरह से छूता है। महात्मा गाँधी और विवेकानंद दोनों सरला देवी चौधरानी के व्यक्तित्व के प्रशंसक थे।एक और बापू ने उन्हें अपनी आध्यात्मिक पत्नी क्स्पिरिचुअल वाइफद्ध तक कह दिया था, वो भी तब जब सरला देवी को क्रांतिकारियों के तरीके ज्यादा भाते थे। दूसरी और विवेकानंद सरला देवी को अपने साथ जोड़ना चाहते थे ताकि दुनिया को दिखा सके कि भारतीय स्त्रियां ऐसी सशक्त भी होती हैं।" [27] सरला देवी चौधरानी के अद्भुत और गरिमामय व्यक्तित्व से स्वामी विवेकानंद स्वयं प्रभावित रहते हैं। क्या इस विशाल व्यक्तित्व को जीवन में वह स्थान मिला जिसकी वह पूर्णत: हकदार थी ?

धरती पर हमेशा के लिए कोई नहीं ठहरताएलेकिन सरला देवी के जाने के बाद इतिहास के पन्नों पर उनकी नामौजूदगी उनके प्रति जानबूझकर किया गया प्रपंच सा महसूस होता है। कोई कलम उनके जीवन के यथार्थ को पन्नों पर उकेरने की हिम्मत करती भी तो कैसे? कई महान हस्तियों की वास्तविक छवि धुंधला जो जाती। एक महान योद्धा की तरह जीवन को परिभाषित करने वाली साहसी स्त्री की जीवन गाथा को एक तरह से इतिहास की गहरी खाई में दफन कर दिया जाना विचलित करता है।

संदर्भ सूची:

1 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ -15
2 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ -15
3 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ -35
4 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ - 45
5 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ - 45
6 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ - 47
7 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ - 49
8 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ - 53
9 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ -54
10 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ -54
11 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ - 64
12 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ -65
13 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ - 65

Received **02 October 2025**; Accepted **20 October 2025**. Available online: **30 October 2025**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA

Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 10, October. 2025

14 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ -66

15 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ - 67

16 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ -67

17 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ -70

18 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ -71

19 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ -72

20 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ -73

21 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ -74

22 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ -81

23 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ -81

24 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ -82

25 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ -89

26 सरावगी अलका - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय, पृष्ठ -216

27 मुखर्जी अनिमेष: ठाकुरबाड़ी गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर का कुटुंब वृतांत, पृष्ठ- 169

Received **02 October 2025**; Accepted **20 October 2025**. Available online: **30 October 2025**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License